INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(1): 05-07
Received: 09-10-2021
Accepted: 19-12-2021

डॉ. व्ही. जी. सोमकुवर
सहायक प्राध्यापक एवम् विभागप्रमुख, इतिहास विभाग, गजमल तुळशीराम पाटील, महाविद्यालय, नंदुरबार, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
डॉ. व्ही. जी. सोमकुवर
सहायक प्राध्यापक एवम् विभागप्रमुख, इतिहास विभाग, गजमल तुळशीराम पाटील, महाविद्यालय, नंदुरबार, महाराष्ट्र, भारत

प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिती का ऐतिहासिक अध्ययन (सिंधू सभ्यता सें बारहवीं शताब्दी तक)

डॉ. व्ही. जी. सोमकुवर

सारांश
प्राचीन भारत में नारी का रूप विलोभनीय था| स्त्री शिक्षा कि उपेक्षा की जाती थी| इस वजहसें नारीयोंकी मानसिक उन्नती नही हो पायी थी| सामाजिक जीवनमें पुरुषोके साथ साथ स्त्री कि उन्नती भी आवश्यक है| समाज में नारी का अस्तित्व बहुतही महत्वपूर्ण रहा है| वैदिक काल में नारी को बहुत सन्मान मिलता था| लेकीन समयकें साथ साथ उसमे बदलाव हुआँ और नारी की दशा सोचनिय होने लगी| नारी को गुलाम समजा जाने लगा|
प्रस्तुत शोधपत्र में प्राचीन कालीन समाज में स्त्रियोंकी स्थिती कैसें थी इसका अध्ययन करनेका प्रयास किया गया है|

मूल शब्दः नारी, प्राचीनकालीन समाज, नारी की स्थिती, बुद्धकाल, गुप्तकाल, राजपूत कालीन समाज

प्रस्तावना
प्राचीन कालीन भारत कें इतिहास में सिंधू संस्कृती कें पश्चात वैदिक काल का आरंभ होता है| इसे आर्य संस्कृती भी कहा जाता है| इस काल कें बाद भारत कें राजकीय एवं सामाजिक जीवन में बहुतही बदलाव आया हुआ प्रतीत होता है| समाज में नारी कि स्थिती बहुतही सोचनिय दिखाई देती है| समाज में पुरुषो कि तुलना में नारी को दुय्यम स्थान मिला हुऑ दिखाई देता है| [१]

वैदिक कालीन समाज में नारी कि स्थिती
वैदिक कालीन समाज में नारी को मान सन्मान दिया जाता था। यज्ञो में पती कें साथ उसका होना अनिवार्य था। परिवार में साधारणतः एक पत्नीत्व प्रथा प्रचीलीत थी। नारी को शिक्षा ग्रहण करणे का अधिकार था। नारी स्वयं अपने विवाह हेतू वर का चयन कर सकती थी।[२]
वैदिक कालीन समाज में नारी कि स्थिती अच्छी थी। उन्हे पर्याप्त स्वतंत्रता थी। पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का प्रचलन नही था। लेकीन नारी को राजनीती में भाग लेने का तथा संपत्ती में अधिकार प्राप्त नही थे।[३]

प्राग्मोर्ययुगीण समाज में नारी कि स्थिती
बौद्ध साहित्य में नारी कि स्थिती का जो वर्णन मिलता है उससे स्पष्ट होता है की वैदिक

कालीन समाज की तुलना में इस समय नारी कि स्थिती खराब हो गई थी| नारी कें शैक्षणिक अधिकारो में कमी आ गयी थी| समाज में कूछ नारीया विदुषी भी होती थी|[४]

समाज में देह व्यापार करनेवाली नारी को आदरपूर्वक स्थान था| वैशाली राज्य कि वेश्या आम्रपाली को भगवान बुद्ध ने स्वयं दीक्षित किया तथा आम्रवाटीका दान कर दिया था| इस समय समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन समाज कि कुलीन नारियो में दिखाई देता है|[५]

मौर्यकालीन समाज में नारी कि स्थिती

मौर्यकालीन समाज में संयुक्त परिवार कि प्रथा का प्रचलन था| नारी को तलाक लेने का अधिकार था| नारी स्वयं भी तलाक ले सकती थी| पती कि मृत्यू हो जाने पर नारी अपना पुनर्विवाह करने कें लिये स्वंतत्र थी|[६]

समाज में कुछ नारीयोको राजा कि अंगरक्षिका भी नियुक्त किया जाता था| समाज में कुछ प्रमाण में पर्दा प्रथा भी प्रचलन में थी| समाज में गणिका नारीयो का भी उल्लेख मिलता है| इस वर्ग कि नारीयो में अभिनेत्री, नर्तकी, गायिका आदी संम्मिलीत थी| मौर्यकालीन समाज में नारी कि स्थिती अच्छी दिखाई देती है|[७]

गुप्त कालीन समाज में नारी कि स्थिती

गुप्तकालीन साहित्य में दी गई जानकारी सें पता चलता है कि, समाज में नारी को प्रतिष्टीत स्थान दिया गया है| नारी को वेदो कें अध्ययन करनेका अधिकार नही था| लेकिन पुराण तथा कृष्णभक्ती करने का अधिकार दिया गया था| उन्हे कुछ प्रमाण में शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार दिया गया था|[८]

समाज में विधवाओ कि स्थिती अच्छी नही थी तथा उन्हे कठोर साधना का जीवन बिताना पडता था| इस समय कें युग में नारी का विवाह सामान्यतः बाल आयु में करणे का प्रघात था| नारी कें उपनयन संस्कार बंद हो गये थे|[९] नारी को सती जाना पडता था| इससे प्रतीत होता है की, गुप्त कालीन समाज में नारी कें लिये सतीप्रथा का प्रचलन आरंभ हुआ| नारी को पर्दाप्रथा सें मुक्त किया गया था| नारी स्वतंत्रापूर्वक विचरण कर सकती थी| नारी को संपत्ती का अधिकार दिया गया था| पुत्र कें अभाव में पती कि संपत्ती पर पत्नी का अधिकार होता था|[१०]

गुप्तत्तोर कालीन समाज में नारी कि स्थिती :

इस काल में गुप्तकाल कि तुलना में स्त्रियों स्थिती में गिरावट आ गई थी| स्त्रियों कि गिरती हुई स्थिती कें कई कारण थे| इस समय विवाह की उम्र बहुत काम हो गई थी| इस काल कें स्मृती तथा निबंध ग्रंथो कें अनुसार स्त्री का विवाह ८ सें १० वर्ष की आयु तक हो जानां अनिवार्य था| आदर्श विवाह आठ वर्ष का मना जाता था| आठ वर्ष कि लड़की को 'गौरी' कहा जाता था| दस वर्ष की लड़की को 'कन्या' कहा जाता था| अधिक सें अधिक कन्यावस्था में लड़की का विवाह हो जाना चाहिये ऐसा माना जाता था| बाल विवाह का स्त्रियों कि शिक्षा पर भी असर पड़ा| सिर्फ राजघराणे, उच्चाअधिकारियों और समृद्ध वैश्य परिवारों कि स्त्रियाँ हि शिक्षित होती थी|[११]

राजपूत कालीन समाज में नारी कि स्थिती

राजपूत कालीन साहित्य सें ज्ञात होता है कि पुत्री की स्थिती पुत्र कि अपेक्षा बहुत गिर गई थी| इस काल में लड़कियों कि शिक्षा राज परिवारों तक सीमित थी| उन्हें प्रायः संगीत, नृत्य, चित्रकला व साहित्य की शिक्षा दी जाती थी| राज परिवारों की कन्याओं को अस्त्र-शस्त्र व घुड़सवारी की शिक्षा दी जाती थी| इस काल में समाज में पर्दा प्रथा विद्यमान थी| इस काल में भी विधवा स्त्रियों की स्थिती अत्यंत शोचनीय थी| उन पर अनेक प्रतिबंध लगा दिये जाते थे| समाज में सती प्रथा का प्रचलन भी जोरो पर था, किंतु यह प्रथा राज-परिवारों तक हि सीमित थी| सती प्रथा कें अतिरिक्त बाल हत्या का भी प्रचलन था| राजपूतकाल में जौहर कि प्रथा का भी प्रचलन था| यद्यपी राजपूत काल कें प्रारंभ में स्त्रियों का सन्मान किया जाता था, किंतु इस युग की समाप्ती तक स्थिती में परिवर्तन हो गया था| स्त्रियों कि स्थिती बारहवीं शताब्दी में अत्यधिक शोचनीय थी व उन्हें भोग विलास कि वस्तू समझा जाने लगा था|[१२]

निष्कर्ष

वैदिक कालीन समाज में नारी कि स्थिती अच्छी दिखाई देती है|

बुद्धकालीन समाज में नारीयोको संघ में प्रवेश मिलना आरंभ हुआॅ दिखाई देता है| गणिकाओ को भी समाज में अच्छा स्थान था| मौर्य कालीन समाज में नारी को स्वतंत्रता प्रदान कि गई थी| पुनर्विवाह करणे का अधिकार प्रदान किया दिखाई देता है| गुप्त कालीन समाज में नारियो को संपत्ती में बहुत ज्यादा अधिकार प्रधान किये दिखाई देते है| गुप्तोत्तर कालीन समाज में स्त्रियों कि स्थिती में गिरावट आई दिखाई देती है| राजपूत कालीन समाज में कण्याओं की बलि देने की प्रथा प्रारंभ हुई दिखाई देती है|

संदर्भ

1. श्रीवास्तव कें. सी., प्राचीन भारत का इतिहास, युनाईटेड बुक डीपो, अलाहाबाद, २००६, पृ. क्र. ८८
2. वही, पृ. क्र. ८९

3. पाण्डेय विमलचन्द्र, प्राचीन भारत का इतिहास (२५० ई.-१२००ई), एस.चन्द एन्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली, २००३, पृ. क्र. ४२७
4. वही, पृ. क्र. ४२७
5. सिंह विनयकुमार, भारतीय इतिहास, यूनिक पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ. क्र. १६ वही, पृ. क्र. १७
6. सम्पादक मंडल, प्रतियोगिता साहित्य सिरीज, इतिहास विश्व एवं भारत, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. क्र. ४९
7. वही, पृ. क्र. ५०
8. शर्मा रामशरण, प्रारंभिक भारत का परिचय, ओरीयंट ब्ल्यैकस्वाँन प्राईवेट लिमिटेड, हैदराबाद, २०१८, पृ. क्र. २४७
9. थापर रोमिला, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, पटना, २००८, पृ. क्र. १३८
10. झा एवं श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, २००४, पृ. क्र. ३८१
11. सम्पादक मंडल, प्रतियोगिता साहित्य सिरीज, इतिहास विश्व एवं भारत, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. क्र. ७३